POOREST AREAS CIVIL SOCIETY (PACS) PROGRAMME

प्रशिक्षण प्रतिवेदन

पी. आर. ए. पर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

अवधिः 14 से 18 सितम्बर 2004

स्थानः तारा ग्राम, ओरछा, म0 प्र0

आयोजन कर्ता : ट्रेनिंग सिस्टम ग्रुप, विकास विकल्प

प्रषिक्षण सहयोग : स्पार

ih- vkj- ,- ij izf'k{kdksa dk izf'k{k.k

vof/k% 14 ls 18 flrEcj 2004

‘‘ग्रामीण सहभागी आंकलन’’ (पी. आर. ए.) पर प्रषिक्षकों का प्रषिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ‘‘विकास विकल्प’’ द्वारा 14 सित्बर 2004 से ताराग्राम, ओरछा में किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन विकास विकल्प के उपाध्यक्ष श्री ए. बी. एम. साहनी ने किया। साथ ही उन्होंने विकास विकल्प द्वारा किये गये कार्यो पर प्रकाष डाला एवं प्रषिक्षणार्थीयों से इस प्रषिक्षण से सीख एवं ज्ञान लेकर अपने–अपने कार्यक्षेत्रों में क्रियान्वयन करने का अहवान किया।

तत्पश्चात प्रषिक्षणार्थीयों का परिचय सत्र् शुरू किया गया। परिचय सत्र् में 2–2 साथियों का ग्रुप बनाकर परिचय का आदान प्रदान हुआ। सभी साथियों ने एक दूसरे को उपहार दिया एवं उपहार देने के कारणों पर प्रकाश डाला। इसके साथ साथ एक सामुहिक परिचय भी हुआ जो काफी रोचक था। आरंभ के इस मौके पर एक समूह गीत ‘‘इसलिये राह हम संघर्ष की चुने’’ गाया गया।

प्रशिक्षण की शुरूआत करते हुए संदर्भ व्यक्ति श्री ए० के० सिंह ने ट्रेनिंग मैनेजमेंट टीम, समय पालन टीम, फिडबैक टीम, सांस्कुतिक टीम एवं प्रतिवेदक टीम का गठन तथा प्रशिक्षण समय तालिका का निर्धारण प्रशिक्षणार्थीयों की सहभागीता से किये।

प्रशिक्षण सत्र् को आगे बढ़ाते हुए प्रो० अंसारी ने प्रशिक्षण के उद्‌देश्य को बताते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से हम अपनी क्षमता एवं दक्षता की पहचान कर उसकी उपयोगिता को बढ़ावा देंगे। मानव केन्द्रित विकास के लिये PRA जरूरी है। PRA के बगैर विकास की प्रक्रिया अधूरी है। साथ ही इन्होंने बताये कि हम अपने प्रशिक्षण के पाँच दिन में 2 दिन PRA के बारे में समझ विकसित करेगें तथा 3 दिन उसे व्यवहारिक रूप से सीखने का कार्य करेगें। इस प्रशिक्षण के दौरान तीन मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जायेगा :–

*1. **PRA** के उपर धारणा की स्वच्छता*

*2. **PRA** के विधियों, तकनीकी एवं विभिन्न उपकरणों के उपर स्पष्ट जानकारी*

3. विभिन्न उपकरणों पर गांव में अभ्यास, प्रस्तुतिकरण एवं उसपर चर्चा

इन तीनो मुख्य बिन्दुओं का यही उदेश्य है कि प्रशिक्षणार्थी PRA के उपर एक सटीक जानकारी प्राप्त कर सके एवं एक कुशल प्रशिक्षक की भूमिका में अपना प्रदर्शन कर सकें।

तत्पश्चात प्रशिक्षण सत्र को आगे बढ़ाते हुए श्री ए० के० सिंह ने कार्ड बाँटकर सहभागीओं से प्रशिक्षण की अपेक्षाओं को लिखवा कर जाना, जिसमें PRA से संबंधित कई अपेक्षायें आयी, जो निम्नलिखित हैः–

- पी. आर. ए. क्या है, एवं इसका उपयोग कहां तथा कैसे होता है?
- पी. आर. ए. एवं पी. एल. ए. मे क्या अन्तर है?
- सहभागियों की धैर्य को कैसे बनाये रखे,
- आवष्यकताओं की पहचान में पी. आर. ए. की भूमिका
- चपाती चित्रण किसे कहते हैं?
- पी. आर. ए. विकास में कैसे सहायक है?
- पी. आर. ए. के माध्यम से लोगों की सहभागिता कैसे सुनिष्चित करें?
- पी. आर, ए. का तकनीकी एवं व्यवहारिक उपयोग कैसे ?।

प्रशिक्षण सत्र को आगे बढ़ाते हुए प्रो० अंसारी ने विकास की अवधारणा के उपर सभी सहभगियो के विचार जाने एवं उसके बाद स्वयं धारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि **''विकास एक सकारात्मक भौतिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक परिवर्तन है''**। साथ ही विकास मॉडल को चित्र द्वारा प्रस्तुत करते हुए कार्यकर्ता, समाज एवं मुद्दों के बीच संपर्क स्थापित कर समुदाय के बारे में बताया गया कि आज के युग में कार्यकर्ता को ग्रामीण सहभागीता के माध्यम से काम करना चाहिये एवं उसके महत्व पर भी प्रकाष डाला गया।

भोजनावकाश के बाद प्रशिक्षण सत्र की शुरूआत ''भैया वो भैया किसान भैया, किसान बहना'' गीत गायन के साथ हुआ।

तत्पश्चात प्रशिक्षण सत्र को प्रांरभ करते हुए श्री ए० के० सिंह ने विस्तार पूवर्क विकास के बदलते आयाम एवं पी. आर. ए. के उद्‌भव के बारे में चर्चा किया। उन्होन चर्चा को दो भागों में विभक्त किया

1. विकासः आजादी से पहले
2. विकासः आजादी के बाद

1. विकासः आजादी से पहले :

गांधी जी ने लोगों के सषक्तिकरण के लिए औपचारिक एवं अनौचारिक सहभागिता को बहुत महत्व दिया एवं भारत के राजनेताओं को विभिन्न समय अपने विचार से अवगत भी कराये। इसका मतलब था लोगों के विकास में उनकी स्वयं की भूमिका अनिवार्य होना चाहिए ताकि लोग स्वयं अनुभव कर सकें। उस समय के समाज में–

1. बहुत सशक्त समाजिक ढांचा था
2. सामूहिक निणर्य प्रक्रिया थी
3. अनौचारिक एवं औपचारिक पंचायती राज व्यवस्था थी

इन्ही तीनों की उपस्थिति के कारण भारतीय समाज 200 बर्षों के गुलामी के बाद भी टुटा नही एवं यही कारण था कि महात्मा गांधी ने ऐसी व्यवस्था की वकालत की।

2. विकासः आजादी के बाद

आजाद भारत में विभिन्न विकास की प्रक्रियाओं में लोगों को शामिल नही किया गया क्योंकि पष्चिमी देषों के मॉडल को हमारे देष में भी अपनाया गया। अमेरिकन राष्ट्पति ट्रुमैन ने विकास शब्द का उपयोग पहली बार 1949 में किया । उसके बाद सारी दुनिया के गरीब देषों में आर्थिक विकास के लिए संसाधन मुहैया विभिन्न श्रोतों से किया गया था। ऐसा देखा गया है कि पूरी दुनियां में विकास का मॉडल भी वही से आता है जहां से आर्थिक सहयोग मिलता है अतः दुनियां के गरीब देषों में विकास का मॉडल भी पष्चिमी देषों से आया जो यहां की संस्कृति एवं समाजिक ढांचा के अनुरूप नही था। इसी तरह का एक कार्यक्रम जो ''समुदायिक विकास कार्यक्रम'' के नाम से जाना जाता है, 1952 में भारत में लागू किया गया जो आषानुरूप सफल नही रहा।

1957 में बलवंत राय मेहता कमिटी ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम की जगह पंचायती राज व्यवस्था पर बल दिया एवं इसकी अनुषंषा की क्योंकि यह जनता की इच्छा, अकांक्षा एवं समाजिक ढांचा के अनुरूप थी। इसी कमिटी के सुक्षाव पर 1958–59 में हमारे देष के विभिन्न राज्यों में पंचायती राज का चुनाव भी हुआ जो कहीं सफल, कहीं अर्ध सफल एवं कहीं विफल रहा। अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर यदि देखें तो **UNRISHED** (यह एक अंतर्राष्ट्रिय शोध संस्थान है) के माध्यम से 1962 में आर्थिक विकास के कार्यक्रमों का अध्ययन भी कराया गया जिससें निष्कर्ष निकल कर आया कि विकास सिर्फ समाज के आर्थिक पहलु से ही जुड़ा हुआ मुद्दा नही है बल्कि इसके अन्य समाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयाम भी है। इस प्रकार भारत समेत दुनियां के विभिन्न गरीब देषों में समाजिक–आर्थिक विकास कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रिय सहयोग से चला किन्तु यह भी आषानुरूप सफल नही रहा। 1970 में पुनः **UNRISHED** ने अपने शोध प्रतिवेदन में कहा कि विकास कार्यो में जबतक लोगों की सहभागिता नही होगी जबतक उनका विकास संभव नही है। 1968 में पौलो फेररे ने भी अपने एक पुस्तक में जनसहभागिता को जनसषक्तिकरण का मूल मत्रं बताया। फलस्वरूप 1970 के दषक से ही विकास के क्षेत्र में सहभागिता पर जोर दिया जाने लगाा। बहुत सारे सरकारी एवं गैर सरकारी विकास कार्यक्रमों में सहभागिता को मूल आधार बनाने की कोषिष हुई लेकिन विकास की मुख्य धारा में इसको आषानुरूप जगह नही मिला।

1978 में रैपिड रूरल एपराइजल (त्वरीत ग्रामीण आंकलन) को ग्रामीण खेत्रों से आंकड़ा संग्रह में उपयोग किया जाने लगाा जो जन सहभागिता पर आधारित था। 1988–89 में पी. आर.. ए. का उपयोग भारत एवं किनिया में हुआ। यह प्रक्रिया विभिन्न संस्थानों के सहयोग से समृद्ध होता रहा । सहभागिता के माध्यम से संगठन निमार्ण एवं संगठन के माध्यम से अधिकार सुनिष्चित करने की प्रक्रिया 1990 के दषक में जोर पकड़ी। 1990 के दषक में विभिन्न संस्थानों ने पी. एल. ए. (सहभागी सीख एवं उसका कार्यान्वन) का उपयोग शुरू किया जो पी. आर.. ए. का ही एक रूप है। 90 के दषक में जितनी भी प्रक्रियाएं सामने आयीं वो सारी प्रक्रियाएं जन सहभागिता पर ही अधारित थी। इन सभी प्रक्रियाओं में पी. आर. ए. एक सषक्त जन सहभागिता को सुनिष्चित करने की प्रक्रिया बनकर उभरी जिसे विभिन्न संस्थान जैसे सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन, षिक्षण संस्थान, दाता संस्थाएं इत्यादि उपयोग में ला रहे हैं जिससे विकास की गति को और

प्रभावी बनाया जा सके अन्य रूप में इसी को निम्न लिखित तरीके से दिखाय जा सकता है।

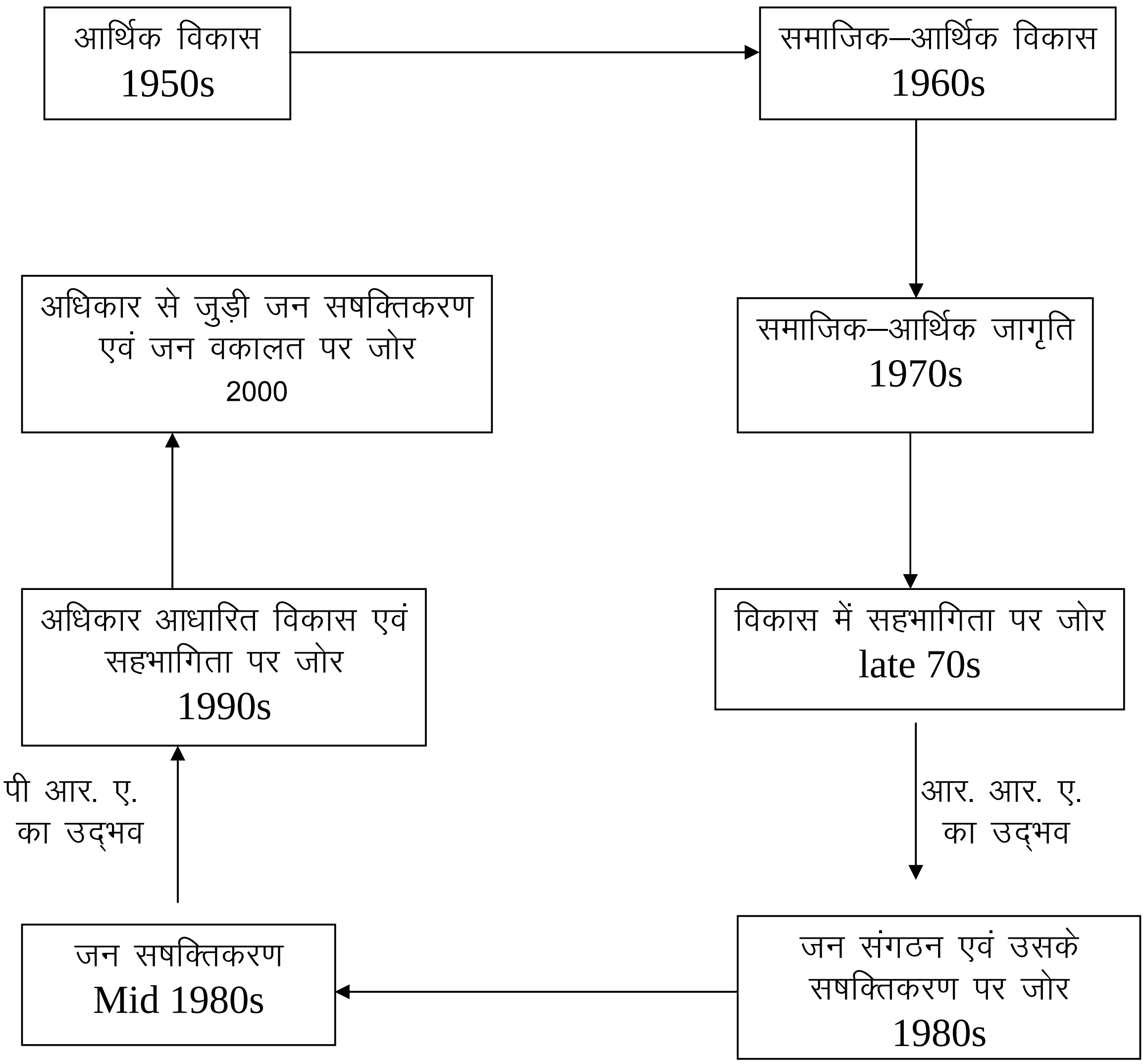

उद्‌भव की प्रकिया में पी.आर.ए. ने पूरे तंत्र को एक स्थान से दूसरे स्थान मे परिवर्तन किया जैसे–

- दबाव से सषक्तिकरण की ओर
- बंद से खुलापन की ओर
- व्यक्तिगत से समुदाय की ओर
- मापने से क्रमांकण एवं प्राथमिकीकरण की ओर

- ➢ सीमित से संपर्क की ओर
- ➢ तनाव से खुषी की ओर
- ➢ अलगाव से मिलन की ओर

वर्तमान परिदृष्य में पी.आर.ए. विकास, सषक्तिकरण एवं गुणवतापूर्ण योजना कार्यान्वन के क्षेत्र में सर्वविदित विधि एवं प्रक्रिया है।

पूरे प्रस्तुतीकरण के बाद सहभागियों ने कुछ प्रष्न रखे जो निम्नलिखित हैं–

- क्या विकास की पूरी प्रक्रिया भूमंडलीकरण से जुड़ी है
- सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनो में ताल मेल कैसे बैठाया जा सकता है ।
- जेन्डर समता की बात कब आई
- क्या नेटवर्किगं एक नई तरह की जमींदारी व्यवस्था है?
- दाता संस्थाएं पैसा क्यो देती हैं

इन सभी प्रष्नों पर दोनो सहायकों ने अपनी विचार स्पष्ता से रखे एवं लोगों ने उसपर संतोष व्यक्त किया।

इसके बाद पी. आर. ए. के साधारण समझ पर चर्चा शुरू हुई एवं सहायकों ने कहा *“पी. आर. ए. एक ऐसा उपकरण है जिसके माध्यम से लोगों की जरूरत / ईच्छा /अकांक्षा सटीक रूप से जानने में सहायता मिलती है।”*

दूसरे शब्दों में *“ पी. आर. ए. एक उपकरण एवं तकनीक है जो समुदाय के लोगों से बात करने में , उन्हे समझने में एवं उनसे सीखने में मदद करता है।”*

सहायकों ने कहा “ जो हम देखते हैं वह वास्तविकता नही है बल्कि वास्तविकता को हम खुली आंखों से देख नही पाते इन्ही वास्तविकताओं को देखने में पी. आर.. ए. हमारी मदद करती है”।

नीला मुखर्जी के अनुसार

“ पी. आर.. ए. लोगों के देषीय ज्ञान एवं जानकारी को बढ़ाने में उन्ही की सहभागिता सुनिष्चित करने की प्रक्रिया है।”

अतः पी. आर. ए. एक ऐसा बृक्ष है निसके पास विभिन्न लोग विभिन्न कारणों से जाते हैं। यह एक लचीला, कम खर्चीला एवं कम समय लगने वाला प्रक्रिया है जो समुदाय से नई चीजों को सीखने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

अंत में ''PRA एक आधार/विधि/तकनीक के रूप में विकास प्रक्रिया में क्यों आवश्यक है'' के संबंध में 3 ग्रुप में चर्चा कर चार्ट में लिखा गया जिसे अगले दिन (आज) प्रस्तुत करने का निर्णय हुआ।

इस प्रथम दिन के प्रशिक्षण में संदर्भ व्यक्ति द्वय ने बहुत ही सरल, सहज एवं व्यवहारिक उदाहरणों द्वारा प्रशिक्षणार्थीयों को समझाये जिससे प्रशिक्षणार्थीयों में विकास की अवधारणा एवं PRA के बारे में समझ बनी।

दिनांकः 15.09.04 (प्रषिक्षण का दूसरा दिन)

सहायक द्वय ने सत्र का आरंभ 2 मिनट के मौन से शुरू करवाया, जिसका उद्देश्य था कि हम अपने साथियों की अच्छी बातों को उजागर करे। मौन चिंतन के बाद सामूहिक चेतना गीत ''हम लोग है ऐसे दीवाने दुनिया को बदल कर मानेगे'' गाया गया। इसके बाद प्रथम दिन (14/09/04) का प्रतिवेदन डॉ० कैलाश जी द्वारा प्रस्तुत की गई एवं सभी सहभागियों के विचार लिए गये।

डॉ० अंसारी ने संक्षिप्त व्याख्यान में बताया की PRA एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा हम समाज से कुछ सीखते है न की उन्हें सीखाते है। उन्होने यह भी बताया कि T.O.T का अर्थ T.O.L (Transfer of Learning) हैं। इसके बाद विकास योजना में PRA के महत्व एवं जरूरत के विषय पर पूर्व में गठित तीनों समूहो द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया जिसके आधार पर सहायकों द्वारा उसका निचोड़ प्रस्तुत किया गया, जिनमें निम्नलिखित बातें सामने आई।

- यह अतिंम व्यक्ति तक पहुँचने की कड़ी है।
- जरूरत/समस्याओं/संभावनाओ/संसाधनों/विश्लेषण/प्राथमीकिकरण करने में सहायक हैं।
- सामूहिक निर्णय एवं समस्या समाधान में सहायक।
- विकास योजनाओ में GO और NGO में बेहतर सहभागिता के लिए।
- सूक्ष्म परिकल्पना के लिए।
- समता मूलक समाज एवं स्थायित्व प्राप्त करने के लिए।
- कार्य योजना विकसित करने के लिए।
- शोध के लिए जगह बनाता है।
- समाज में छिपी, जानकारी को बाहर लाने के लिए।

तदोपरान्त डॉ० अंसारी ने PRA कर्ता को ग्रामीण क्षेत्र में चार स्तर से गुजरने को चित्र के माध्यम से स्पष्ट किया है। वह चार स्तर इस प्रकार है –

Informating - सूचना का स्तर;: जब गांव को हम सुचना पंहुचाते हैं।
Storming - रूकावट का स्तर : जब गांव उसका विरोध करता है।
Norming - स्वीकार्यता का स्तरः जब गांव उसको ग्रहण करता है।

Performing - क्रियान्वयन स्तरः जब गांव के लोग ग्रहण कर क्रियान्वन करते है।

फिर सहायकों ने PRA के 10 सिद्धांतों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि पी.आर. ए. को समझने के लिए इन्हे समझना जरूरी है। ये सिद्धांत निम्नलिखित हैं:–

1. Off Setting biases - पक्षपात टालना
2. Traingulation - त्रिकोणीय जांच
3. Checklist of Item - सूचनाओं का जांच सूचीपत्र
4. Optimising trad off - संसाधनो का बेहतर उपयोग
5. Optimal Ignorance - जितनी जानकारी की जरूरत है उतनी ही लें
6. Appropriats Accuracy - उपयुक्त यथार्थता
7. On Spot analaysis - उसी जगह विश्लेषण
8. Bottom up - नीचे से उपर पहुंचने का तरीका
9. Searching for Difference - अन्तर की खोज
10. Rapport Bulding - ग्रामीणों के साथ संबंध स्थापन

1- i{kikr Vkyuk

bldk eryc gksrk gS fd fdlh ds izfr i{kikr ugh djukA nwljs 'kCnksa esa] vius vuqHkoks ls izHkkfor ugh gksuk ;k fdlh Hkh ifjfLFkfr esa vius vUnj i{kikr iw.kZ joS;s dks ugh vkus nsukA

vr% ih- vkj- ,- vH;kldrkZ ,oa lapkyd dks fuEufyf[kr fc"k;ksa ls izHkkfor ugh gksuk pkfg,A

- LFkku ds pquko dks ysdj
- O;fDr ls
- IzksktsDV ls
- tsUMj ls
- ekSle ls
- O;olkf;d tkudkjh ls
- Lokxr@vkoHkxr ls

d- LFkku dks ysdj i{kikr

- bldk eryc gksrk gS fd fodkl ls tqM+s vf/kdkjh jkLrs ls lVs ,oa lqfo/kktud vkokxeu okys bykds dks gh nkSjk ds fy, pqurs gS rkfd le; de yxsA
- nwj njkt ds bykds es ,sls vf/kdkjh ugh tkuk pkgrs
- cgqr lkjs d`f"k] flapkbZ] bR;kfn ds dk;Z eq[; lM+d ds fdukjs fd;s tkrs gS rkfd yksx vklkuh ls nkSjk dj ldsA

- fodkl dk;Zdze ls tqM+s vf/kdkjh flQZ nkSjk ds fy, mUgh xkaoksa dks pqurs gS tks iDds jksM ls tqM+s gksrs gSaA xM~<k ;k fdpM+ okys jkLrs dks os Vky tkrs gSa
- xkao ds nkSjk ds le; eq[;r% mUgh bykdksa dks ns[kk tkrk gS tgka rd vkoxeu dh lqfo/kk gSA xkao ds ckgjh bykdksa dks NksM+ nsrs gSaA

bldk fl)kar ;gh gS fd ih-vkj-,- ls tqM+s yksxksa dks nwj&njkt ds xkao esa tkuk pkfg, ,oa xkao es Hkh ckgjh fgLlksa dk v/;;u djuk pkfg,A

[k- izkstsDV dks ysdj i{kikr

bldk eryc gS ih-vkj-,- tqM+s yksx mUgh bykdksa esa tkuk ilan djrs gSa tgka dksbZ dk;Zdze py jgk gksrk gS rkfd fcuk fdlh ijs’kkuh ds yksxksa ls ckrphr dj ldsaA

x- O;fDr dks ysdj i{kikr

lk/kj.kr% ih-vkj-,- drkZ ,oa lapkyd mUgh yksxksa ls laidZ djrs gS tks xjhc ,oa fdlku ugh gksrs gS] tSls& xzke lsod] eqf[k;k] f’k{kd ,oa x.kekU; O;fDrA blls vkadM+ksa dh xq.kork ,d gh nk;js esa vk tkrh gSA bl izfdz;k esa ftl O;fDr ;k leqnk; ls ckr djuk gS mlh ls laidZ djuk pkfg, u fd tks vkjke ls tkudkjh ns nsa mllsA

?k- ekSle dks ysdj i{kikr

xkao dk nkSjk lk/kkj.kr% c"kkZr dks NksM+dj fd;k tkrk gS rkfd fofHkUu eqflcrksa ls cpk tk ldsA c"kkZr dk ekSle lekU;r% fdlkuks ds fy, leL;kvksa dk ekSle gksrk gSA D;ksafd lHkh fdlku vius cht ,oa iwath [ksrh es Mkydj Qly dk bUrtkj djrs gSaA ;gh mfpr le; gksrk gS] muds fopkj ,oa vuqHko dks tkuus dk rkfd mudh leL;kvksa dh rg rd iagqpk tk ldsA

bl lanHkZ esa ih-vkj-,- dk fl)kar gS fd ih-vkj-,- drkZ dks c"kkZr ds ekSle esa gh tkuk pkfg, rkfd fdlkuksa@xzkeh.kksa@efgykvksa leL;kvksa esa lVhd :Ik es :&c&: gks ldsA

M- dqVuSfrd i{kikr

bldk rkRi;Z gS fd cgqr gh prqjkbZ ls yksxksa dh leL;kvksa dks lquus ;k le>us ls Vky nsuk rkfd yksx le> u lds A ;g xzkeh.kks ds fy, ftUgksus xzkeh.k nkSjs ds fy, lHkh O;oLFkk fd;s ,d csbtrh dk euksHkko rS;kj djrsa gSaA D;ksafd mudh ckr lgh <ax ls ,d okLrfod lanHkZ es ugh lquh tkrhA

bl lanHkZ esa ih-vkj-,- fl)kar ds vuqlkj iz;kl djuk pkfg, fd misf{kr yksxksa tSls& vuqlqfpr tkfr] tutkfr] bR;kfn ls Hkh lgh ifjizs{; es ckr gks ldsA

p- is'ksoj i{kikr

fodkl ls tqMs+ vf/kdkfj;ks ,oa dk;ZdrkZvksa dks is'ksoj izf'k{k.k fn;k tkrk gS fd /kuh ,oa i<s+ fy[ks fdlku gh fdlh ubZ pht dks xzg.k djus ds izfr laosnu'khy gksrs gSa vr% xjhcksa dh vis{kk /kuh ,oa i<+s fy[ks fdlkuksa ls ckr djus dh izkFkfedrk dks T;knk egRo feyrk gSA

;gka ij ih-vkj-,- fl)kar ;g gS fd xjhc fdlku@leqnk; ls ckrphr dks egRo fn;k tkuk pkfg, rkfd mudh leL;kvksa dk lek/kku fd;k tk ldsA

2- f=dks.kh; tkap ¼V~Saxqys'ku½

2-1 /kkj.kk

;g ih-vkj-,- dk ,d egRoiw.kZ fl)kar gSA bldk mi;ksx rhu izdkj ds phtksa dk iz;ksx djds ih-vkj-,- fof/k ls izkIr tkudkjh;ksa @ rF;ksa dks lR;kfir djus gsrw tkapus&ij[kus ds fy, fd;k tkrk gSA

V~Saxqys'ku esa izkIr lqpukvksa dks tkapus&ij[kus ds fy, fdlds }kjk lqpuk feyh] dkSu lk i)fr viuk;k x;k ,oa fdldks lqpuk feyh bR;kfn phtksa dks /;ku esa j[kk tkrk gSA

ih-vkj-,- fof/k ls izkIr lqpukvksa dks dbZ i)fr] dbZ izdkj] dbZ izdkj ds 'kks/k vkSj dbZ fl)karksa ds ek/;e ls tkapk ij[kk ¼dzkSl psfdax fd;k½ tkrk gSA

2-2 ih-vkj-,- esa f=dks.kh; tkap ¼V~Saxqys'ku½ ds rjhds

d- ih-vkj-,- izfdz;k esa lfEefyr lnL;ksa ds }kjk

ih-vkj-,- izfdz;k esa dbZ izdkj ds yksx lfEefyr gksrs gS tSls& xzkeh.k] fodkl dk;ZdrkZ vusd foHkkxksa ds oSKkfud bZR;kfnA ftuds }kjk f=dks.kh; tkap ¼V~Saxqys'ku½ fd;k tkrk gSA

[k- i)fr

dbZ izdkj ds ih-vkj-,- fof/k;ksa tSls& ns[kdj] uD'kk] fp=.k] dzekadu] ckr&phr] iz'u iwNdj] utfnd ls tkap ij[k dj] fo'ys"k.k vkfn f=dks.kh; tkap ¼V~Saxqys'ku½ i)fr esa bLrseky fd;s tkrs gSaA

tc fdlh fo'ks"k rF;@lwpuk laxzg djus ds fy, ,d ls vf/kd rjhdksa dk iz;ksx fd;k tkrk gks rks lR;kiu dh Lor% tkap gks tkrh gSA

lq>kko ds rkSj ij ;g dgk tk ldrk gS fd ih-vkj-,- izfdz;k ds izFke pj.k esa V~katsDV dk iz;ksx dkjuk pfg, tSls& lekftd ekufp=] lalk/ku ekufp=] rduhfd ekufp= bZR;kfnA ml nkSjku esa ns[kdj] iz'u iwNdj ;k ckrphr djds ljyre rjhds ls lR;kiu dh tkap djuh pkfg,A

x- lwpuk ds Jksrksa dk laxzg.k

ih-vkj-,- dk tc fQYM esa vH;kl fd;k tkrk gS rc fo'ks"k mns'; dh izkfIr ds fy, ,d ls vf/kd Jksr@lalk/ku O;fDr ij fuHkZj djuk iMrk gSA vH;kl drkZ dHkh Hkh ,d rjg ds lwpuk Jksrksa ls larq"V ugh gks ldrk gSA fo'ks"k mns'; dh izkfIr ds fy, mls izfdz;k dks 'kq: djus gsrw eq[; lalk/ku O;fDr ls laidZ LFkkiu djuk iM+rk gSA fQj ml {ks= dk Hkze.k fd;k tkrk gS tgka dh ckrs crykbZ tk jgh gks rkfd fc"k; ls lacf/kr vfrfjDr lqpuk,a izkIr gks ,oa eq[; lalk/ku O;fDr ls izkIr lqpuk dk lR;kiu gks ldsA

3- lwpukvksa dk tkap lwphi=

ih-vkj-,- vH;kldrkZ ds }kjk ih-vkj-,- ds izR;sd fof/k@i)fr@rduhd dk ,d foLr`r tkap lwph fyf[kr :i esa rS;kj fd;k tkrk gSA

- tkaplwph ¼psdfyLV½ fc"k;oLrq ds vk/kkj ij fo'ks"k rduhd@fof/k dk iz;ksx djus dks bafxr djrk gSA
- nwljs 'kCnksa es psdfyLV ih-vkj-,- ds fo'ks"k fof/k ¼VwYl½ ds fo"k; dk dsUnz fcUnq gSA mnkgj.k Lo:i %&
  - lekftd ekufp= dk fc"k; oLrq D;k gS\

- ➢ rduhdh ekufp= esa fdu fdu phtksa dks vkuk pkfg,\
- ➢ lalk/ku izokg fp=.k ;k fnup;kZ fp=.k es ih-vkj-,- vH;kldrkZ dks fdl izdkj xzkeh.k ds le{k ckr djuk pkfg,A

- bl izdkj ds iz'uks dk mrj ds fy, fofHkUu fo"k;ksa dh ,d lwph rS;kj djuk iM+rk gS ftles [kkl rduhd dks O;ogkj esa ykus esa enn djrk gSA

4- संसाधनो का बेहतर उपयोग

;g bafxr djrk gS fd tks rF;@lqpuk izkIr fd;s tkrs gS mlds cnys fdrus izdkj ds vkSj fdrus ek=k esa lalk/kuksa dk iz;ksx fd;k tkrk gSA ;gka lalk/ku dk rkRi;Z gS & :i;k] lkexzh] dk;ZdrkZ ,oa le;A

lalk/kuksa dk izHkkoiw.kZ iz;ksx esa bldh ;ksX;rk] vko';drk] ek=k] 'kq)rk] lR;rk] le; dh egrk vkfn lfEefyr gksrs gSaA

ih-vkj-,- vH;kldrkZ dks izR;sd fc"k; dh fof/k@rduhd@i)fr dh mi;ksfxrk] rkjrE;rk rFkk eqY; cks/k dks ges'kk /;ku es j[kuk pkfg,A ;g ges'kk /;ku esa jguk pkfg, fd dHkh Hkh fdlh Hkh ifjfLFkfr es bldk nq:i;ksx u gksA

5- जितनी जानकारी की जरूरत है उतनी ही लें

ih-vkj-,- vH;kldrkZ dks fdl izdkj dh lqpuk,a ,d= djuk gS vkSj fdls ugh] fdl fo"k; ij dkSu fof/k bLrseky djuk gS bldh tkudkjh HkfyHkkafr gksuk pkfg,A

tc fo'ks"k ih-vkj-,- VwYl ds fy, psdfyLV cuk;k tkrk gS mlh le; blij Li"Vrk gks tkuk pkfg,A fo'ks"k ifjfLFkfr esa fo'ks"k ih-vkj-,- VwYl dk bLrseky ds fy, {ks= dh ifjfLFkfr ds vk/kkj ij iq.kZfopkj dj ysuk vko';d gksrk gSA rkfd vuko';d rF;ks rFkk ,d gh izdkj ds lqpukvksa ds laxzgu ls cpk tk ldsA

6- mi;qDr ;FkkFkZrk

- bldk rkRi;Z gS fd bruk vf/kd ;FkkFkZrk dks ekius dh vko';drk ugh gS ftruk okLro es t:jr ugh gSA
- ih-vkj-,- vH;kldrkZ dks ;g r; dj ysuk pkfg, fd fdl izdkj dh lwpuk@rF; ds fy, fdruk ;FkkFkZrk vko';d gSA
- ih-vkj-,- vH;kldrkZ dks ;g r; dj ysuk pkfg, fd fdl mn~ns'; dh izkfIr ds fy, ih-vkj-,- dh vko';drk gSA

7- उसी जगह विश्लेषण

ih-vkj-,- izfdz;k esa vf/kd ls vf/kd lh[k {ks= ls gh izkIr gksrh gSA blfy, lwpukvksa rFkk rF;ksa dk laxzg djrs le; {ks= ij gh izR;sd rF;ksa@tkudkjh;ksa dk Hkfy&Hkkafr fo’ys"k.k djuk vko’;d gksrk gSA

- ih-vkj-,- vH;kldrkZ dks fu/kkZfjr le;&vUrjky es fQYM odZ dk eksfuVjhax djuk pkfg;s A rkfd ;g irk py lds fd ftl mn~ns’; ds fy, ih-vkj-,- fd;k x;k og leqnk;@{ks= ds fodkl es dke vk jgk gS fd ughA

8- uhps ls mij igqapus dk rjhdk ¼cksVe&vi ,ijksp½

- vf/kdkjh] fodkl dk;ZdrkZ] oSKkfud] fo|kFkhZ] 'kks/kdrkZ lHkh xkao ls lh[krs gSA
- rF; laxzg dh izfdz;k uhpys Lrj ls izkjaHk gksrh gS u fd mij Lrj ds inkf/kdkfj;ksa lsA
- ih-vkj-,- vH;kldrkZ Hkk"k.k ugh nsrs cfYd fdlkuksa vkSj xzkeh.kks }kjk dgh xbZ ckrksa dks lqurs gSA
- ih-vkj-,- vH;kldrkZ] fodkl dk;ZdrkZ] oSKkfud ,oa vU; ckgj ds yksx xzkeh.kksa dks lh[kkus ds ctk; muls lh[krs gSaaA
- lgh vFkZ esa ;g iwjk&iwjk lh[kus dk mYVk izfdz;k gS] T;knkrj xzkeh.k ifjfLFkfr dk vkady.k nksuks dks feykdj fd;k tkrk gSA
- tc xzkeh.k leqnk; ds thou vkSj thfodk ds fo’ys"k.k rFkk xzkeh.k le;kvksa ds ckjs ckrphr fd;k tk jgk gks rc fodkl dk;ZdrkZ ;k 'kks/kdrkZ dks vius vki dks ,d xzkeh.k vFkok fdlku ds :i esa le>rs gq, lkjs fc"k;ksa dks le>uk pkfg, rFkk muds utjh;s ls ns[kuk pkfg,A
- la{ksi esa ge dg ldrs gSa fd ih-vkj-,- vH;kldrkZ vFkok fodkl dk;ZdrkZ xzkeh.kks ds le{k ,slk okrkoj.k rS;kj djs tgka yksx vfr ljy ,oa lgt eglwl djsa vkSj okLrfodrk] lR;rk vkSj fuHkZ;rk ds lkFk vius ckrksa dks j[ksaA

9- अन्तर की खोज

- lkekU;r% lekftd 'kks/kdrkZ ,d gh izdkj ds fl)kar] i)fr] fof/k bR;kfn dks ysdj pyrs gS vkSj mUgh i)fr;ksa ds vk/kkj ij 'kks/k djrs gSaA

- ih-vkj-,- vH;kldrkZ] dks vusd izdkj ds fofHkUurkvksa] fojks/kkHkk"kksa rFkk fo"kerkvksa ds vk/kkj ij v/;;u djuk iM+rk gSA
- tSls tc xkao esa izR;sd O;fDr leku :i ls O;ogkj djrk gS rks D;kas ek= ,d fdlku@xjhc vyx <ax ls O;ogkj djrk gSA

10- xzkeh.kksa ds lkFk laca/k LFkkiu ¼ jSiksZV fcYMhax ½

- ih-vkj-,- vH;kldrkZ vFkok fodkl dk;ZdrkZ dks eq[; Jksr@lalk/ku vkSj xzkeh.kks ds lkFk csgrj lac/k cukuk iM+rk gS vkSj ;g mlds foosd ij fuHkZj djrk gS fd og xzkeh.kks ds lkFk fdruk csgrj laca/k cuk ldrk gSA
- blds egRo dks /;ku esa j[krs gq, blds fl)karks dks vyx&vyx fuEufyf[kr :i ls le>k tk ldrk gS &

10-1 lac/k LFkkiu D;k gS \

- ;g ih-vkj-,- dk ,d egRoiw.kZ fl)kar gSA tc eq[; Jksr@lalk/ku O;fDr dk igpku dj fy;k tkrk gS rc ih-vkj-,- vH;kldrkZ dk ;g igyk dke gksrk gS fd mlds lkFk csgrj lEidZ cuk;sA
- ;g xzkeh.kks ds chp fo'okl iSnk djus dk ,d jkLrk gS rkfd mUgs ;g eglwl gks fd ih-vkj-,- vH;kldrkZ vFkok QSflfyVsVj muds fgr ds fy, lksaprk gSA
- ih-vkj-,- vH;kldrkZ vFkok QSflfyVsVj dks eq[; Jksr@lalk/ku O;fDr dk vius fo'okl es ysus ds fy, vf/kd ls vf/kd iz;Ru djuk t:jh gSA
- lac/k LFkkiu esa eq[; lalk/ku O;fDr rFkk vU; xzkeh.kksa ls T;knk ls T;knk lh[kuk t:jh gksrk gSA
- ;fn xzkeh.kksa ds lkFk lgh ,oa cssgrj laca/k LFkkiu ugh gqvk rks iwjk dk iwjk ih-vkj-,- vH;kl ,d ckj es gh O;FkZ gks tkrk gSA blfy, izk;% ih-vkj-,- lacaf/kr lHkh lkfgR;@'kkL= lac/k LFkkiu dks vko'; igyw ekurk gSA

ysfdu leL;k ;g gS fd lac/k LFkkiu ds fy, dzec) rjhdk ls lacf/kr lkfgR; cgqr de feyrs gSaA

अपराह्न सत्र की शुरूआत एक रोचक खेल से की गई एवं निम्नलिखित चर्चाए की गई।

10-2 lac/k LFkkiu ¼jSiksZV fcYMhax½ esa D;k djsa

lac/k LFkkiu iwjs ih-vkj-,- o vkj-vkj-,- izfdz;k esa vfr egRoiw.kZ fl)kar gSA

lac/k LFkkiu esa vkB phtksa dks djsa %&

- lcdk Lokxr djas
- os tSlk djrs gSa oSlk djsa
- muls lh[ksa
- vius dks izLrqr djsa vkSj viuk mn~ns'; cryk,a
- muds ckjs esa iwNsa
- fouez cusa vkSj
- iz'uksa dks nqgjk,a ,oa fopkj Li"Vrk ls j[ksa

10-3 pkj phtsa u djsa

- jktuhfrd ckrsa u djsa
- rdZ u djsa
- chp esa gLr{ksi u djsa
- vpkud lekIr u djsa

¼ih-vkj-,- dks ykHknk;d] okLrfod] :fpdj rFkk mn~ns';iw.kZ djus ds fy, bls n`<+rkiwoZd viuk;k tkuk pkfg,½

10-4 eq[; lalk/ku O;fDr;ksa dh igpku

fdlh Hkh leqnk; es dgha Hkh ,d leku tkudkj O;fDr ugh jgrs gSaA dqN yksxksa ds ikl cgqr lkjs vuqHkoksa] fo'ys"k.k djus dh vf/kd {kerk] fofHkUu izdkj ds yksxksa ds lkFk laidZ] csgrj lwpukvksa dk izokg] thou&;kiu ds izdkj vkfn ds dkj.k vU; yksxkssa ds vis{kk T;knk tkudkjh gksrh gSA

bl izdkj ds lwpuknkrkvksa dh igpku djus ds fy, dbZ rjg ds yksxksa ls feyuk vfr vko';d gSA vr% oSls lwpuknkrkvksa dh igpku djuk pkfg, tks fuEufyf[kr ckrksa ls rkywd j[krk gks &

- tkudkj gks
- efgyk ,oa iq:"k

- yEcs c"kksZa ls ml txg dk fuoklh gks
- ifjiDo ,oa vuqHkoh gks
- fujh{k.k djus esa mRlqDrk j[krk gks
- vius fopkjksa dks uki&rkSy dj ,oa fu"i{k :i ls j[krk gks

फिर हमने Facilitation Skill For PRA Practitioner पर चर्चा की जिसमें तीन प्रश्न आए।

(1) Facilitation क्या है ?
(2) Practitoner कौन है ?
(3) Skill क्या है ?

जिसका उत्तर बहुत सरल तरीके से दिया गया । फिर बताया गया कि Facilitation Skill में क्या चीजें समाहित है जो निम्नांकित है।

- Practitioner में नम्रता होनी चाहिए।
- अभिनंदन एवं परिचय देने की क्षमता होनी चाहिए।
- Lead Question को रखने की क्षमता होनी चाहिए।
- प्रश्न को सही तरीके से प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए।
- उत्तर देने वाले की बातों को ठीक ढंग सुनने की क्षमता चाहिए।
- प्राप्त उत्तर से सवाल का संबंध तलाशना चाहिए।
- विश्लेषण के लिए लोगो को तैयार करने की योग्यता होनी चाहिए।
- अंत में धन्यवाद देना नहीं भूलना चाहिए।

इस तरह से हमारे दूसरे दिन का अंतिम सत्र शााम 5:00 बजे चाय के साथ समाप्त हो गया। निर्णयानुसार सभी लोग ओरछा की ओर प्रस्थान कर गए।

दिनांक : 16.09.2004 (प्रषिक्षण का तीसरा दिन)

सर्वप्रथम PRA प्रशिक्षण के तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में 15.09.2004 को लिखी गयी प्रतिवेदन प्रतिवेदको द्वारा प्रस्तुत की गयी।

प्रशिक्षण के प्रथम सत्र में आगामी दोनो दिनों में किये जाने वाले कार्यो का विभाजन कर समय रेखा निश्चित की।

प्रशिक्षको ने प्रशिक्षार्थियों में उत्सुकता एवं स्फूर्ति को बढ़ाने के उद्‌देश्य से अपना नेता खोजों नामक खेल प्रशिक्षार्थियों द्वारा खेलाया गया जो काफी प्रेरणादायक तथा रूचि पूर्ण था।

प्रशिक्षक अंसारी साहब ने PRA के विषय पर कौन–कौन सा टूल्स बहुत महत्व पूर्ण है तथा उसका विकास के दृष्टि से कितना महत्व है बड़ा ही सारगर्भित एवं सक्षिप्त और उदाहरणार्थ ढंग से समझाते हुए बिन्दुवार निम्नवत जानकारी देने का प्रयास किया।

PRA TOOLS

1. समय रेखा
2. सामाजिक चित्रण
3. मौसमी विश्लेषण
4. चपाती चित्रण
5. जीविका विश्लेषण
6. संसाधन चित्रण
7. ट्रांजेक्ट
8. जेण्डर विभेद विश्लेषण
9. मैट्रिक्स क्रमांकन
10. रूझान विश्लेषण
11. कारण एवं प्रभाव विष्लेषण
12. विकास यात्रा
13. पाई चित्रण
14. समस्या वृक्ष

उक्त 14 टूल्स में 6 टूल्स पर विस्तृत चर्चा कर के विभिन्न प्रकार का उदाहरणों से समझाया गया जो निम्नलिखित हैः–

1. समय रेखा

le; js[kk xkao dh egRoiw.kZ ,oa ,sfrgkfld ?kVukdzeksa dh izLrqfrdj.k gS] tks xzkeh.kksa ds }kjk dzec) rjhds ls le;@rkjh[k@o"kZ dks n'kkZrs gq, cryk;k tkrk gSA nwljs 'kCnksa esa ;g dgk tk ldrk gS fd le; js[kk xkao dh fo'ks"k dk;Zdze vFkok xfrfof/k vFkok ?kVuk dks vof/k ,oa o"kZ dks n'kZkrk gq, flyfysokj <ax ls izLrqr djrk gSA

bl vH;kl esa fdldh Hkkxhnkjh vfuok;Z gS\

- le; js[kk ls lacaf/kr fdlh Hkh izdkj dh tkudjh ds fy, xkao ds cqtwxZ] vuqHkoh ,oa tkudkj O;fDr gh lgh O;fDr gks ldrs gSaA
- og O;fDr mlh xkao es tUek ,oa iyk&c<+k gks rFkk fofHkUu dk;Zdzeksa ,oa xfrfof/k;ksa dh tkudkjh j[krk gks vkSj fodkl dk;Z ls twM+s ljdkjh ,oa xSj ljdkjh dk;ZdrkZvksa ds lkFk laidZ j[krk gksA

2. समाजिक चित्रण

lgHkkxh ekufp= esa LFkkuh; yksxksa }kjk fdlh Hkh {ks= dk fp=.k tehu vFkok dkxt ij fd;k tkrk gS ftlesa vius {ks=k/kkfjr lekftd lajpuk] vofLFkr xzkeh.k lqfo/kk,a] izkd`frd ,oa ekuo lalka/kuksa dks fn[kyk;k tkrk gSA

lgHkkxh ekufp=.k dks vkSj vf/kd Li"V :i ls le>us vFkok izLrqr djus ds fy, vusd izdkj ds fo"k;ksa@igyqvksa dks lfEefyr fd;k tkrk gS] tSls%&

- ?kj
- i'kq/ku
- [ksr dk vkdkj
- ty lalk/ku
- Hkwfe
- Takxy
- isM+&ikS/ks
- lM+d
- lsok&lqfo/kk,a
- lekftd lalk/ku
- lk{kjrk
- fcekfj;ka bR;kfn

gkaykfd bu fo"k;ksa@oLrqvksa dk Lo:i fofHkUu ifjfLFkfr ,oa le; es cnyrs jgrk gSA bl izdkj ds ekufp= dks fo"k; vk/kkfjr fd;k tk ldrk gS] tSls&

- lalk/ku ekufprz& ;g xkao vFkok {ksrz ds izkd`frd ,oa ekuo lalk/kuksa dks bafxr djrk gS @ n'kkZrk gSA
- lekftd ekufprz& ;g yksxksa ds ?kjksa vkSj vU; lekftd lajpukvksa ¼lerkvksa ,oa fo"kerkvksa½ dks n'kkZrk gSA
- LokLF; ekufp=& ;g yksxksa ;k leqnk; ds LoLF; dh fLFkfr dks crykrk gSA
- lk{kjrk ekufp=& ;g lk{kjrk ,oa fuj{kjrk dh fLFkfr dks n'kkZrk gSA

- 'kkldh; ekufp=& ;g 'kkldh; usr`Ro ¼ikjEifjd] ljdkjh] izlk'ku½ lacf/kr ckrksa dks n'kkZrk gS tks xkao ds 'kklu O;oLFkk dks fn[kkrk gSA

lgHkkxh ekufp=.k dh izfdz;k esa dqN yksx fp=.k djrs gSa tcfd nwljs mUgs lVhd @ csgrj djus esa enn djrs gSa vkSj tgka fdlh izdkj dh rzqfV dh xqaatkb'k jgrh gS ;k fdlh izdkj dh lq>ko dh vko';drk gksrh gS ogka os enn djrs gSaA

11 बजे चाय ब्रेक हुआ

3. मौसमी विष्लेषण :–

ekSle yksxksa ds thou vkSj thfodksiktZu dks fofHkUu izdkj ls izHkkfor djrk gSA vr% ekSle ds fofHkUu igyqvksa ,oa fo'ks"krkvksa tks xzkeh.k thou esa vk;s cnyko dks vafdr djrs gSa] tkuuk vko';d gks tkrk gS A xzkeh.k thou dks eq[;r% d`f"k ij fuHkZj gksus ds dkj.k lky esa dbZ vyx&vyx ifjfLFkfr;ksa ls xqtjuk iM+rk gSA blfy, leL;k;ksa dh lgh le> ,oa funku ds fy, xzkeh.k thou ds dbZ igyqvksa ij ekSleh tkudkjh izkIr djuk vfr vko';d gksrk gSA

ekSleh fo'ys"k.k ekSle ds vuqlkj eq[; :i ls izd`fr] c"kkZ] dqf"k] dk;Z dh miyC/krk] feV~Vh dh fLFkfr] Je fnol] etnwjh] [kkn~; inkFkZ dh miyC/krk] fcekfj;ka] vkenuh] [kpZ] [kir bR;kfn esa vk;s ifjorZu dks n'kkZrk gSA

bl i)fr es LFkkuh; yksxksa ls muds xfrfof/k;ka] thfodksiktZu ds rjhds] _.k] fcekfj;ka] c"kkZ bZR;kfn dks ekSle ds vuq:Ik LFkkuh; oLrqvksa dk iz;ksx djds ekSleh dSysUMj rS;kj fd;k tkrk gSA bl Vwy¼i)fr½ dks ekSleh dSysUMj ;k ekSleh Mk;xzke Hkh dgk tkrk gSA

bls ,d bZdkbZ es n'kkZ;k tkrk gS] tSls& fnu] efguk] ekSleh vlekUkrk] fof'k"Vrk] fo'ks"k ?kVuk,a] ck/kk,a] volj] lalk/kuksa dh izpqjrk] lalk/kuksa dh deh] bZR;kfnA fdlh [kkl xfrfof/k vFkok is'kk tSls d`f"k dk;Z ds fy, ,d mnkgj.k nsdj fuEufyf[kr :i ls le>k tk ldrk gSA

- Je dh deh
- fcekfj;ka ,oa fdV&irxksa dk izdksi
- /kkl dk mxuk
- Qly dh dVkbZ
- tqrkbZ rFkk tehu dh rS;kjh

- chtksa dh cqvkbZ
- ioZ R;ksgkj
- fofHkUu lalk/ku ,oa lkexzh
- flapkbZ ds fy, ikuh dh vko’;drk
- rkieku] c"kkZ] feV~Vh dh ueh
- d`f"k mRikn ds fy, cktkj O;oLFkk

4. चपाती चित्रण :–

;g ,d fotqvy i)fr gS tks xzkeh.kksa ds lkFk tqM+s O;fDrvksa ,oa laLFkkvksa tSls& cSad] fodkl dk;kZy;] LokLFk dsUnz] Ldwy] iapk;r] Mkd?kj bR;kfn ds lkFk vkilh laca/kks dks bafxr djrk gS tks fd lkekU; :i ls yksxks ds thou dks izHkkfor djrk gSA

bl Mk;xzke esa fofHkUu vkdkj ds xksykdkj lfdZy gksrs gSa tks fofHkUu O;fDr;ksa vFkok laLFkkvksa ds egRo ds vuq:i gksrs gS tcfd lfdZy dh nwjh yksxksa ds lkFk laidZ dks n'kkZrk gSA bl izdkj ds lfdZy ;k rks tehu ij fpf=r fd;k tkrk gS ;k dkxt ij A ;fn ,d lfdZy nwlj lfdZy ij p<+ tkrk gS rks bldk eryc gS mud laidZ esa Hkh vksHkj ySfixa gSA

5. जीविका संसाधन

;g vH;kl yksxksa ¼efgykvksa vkSj iq:"kksaa½ ds fnup;kZ dks vyx&vyx ekSle vkSj rqyukRed n`f"V ls tkuus ds fy, fd;k tkrk gSA ;g thfodk ds lk/kuks vkSj rjhds dks Hkh le>us esa enn djrh gSA

जीविका के कई साधन होते हैं ग्रामीणों में नौकरी, रिक्सा चालक, बढ़ई गीरी, मजदूरी कृषक मजदूर, खेती आदि जीविका के संसाधन है।

6. जेन्डर विभेद विष्लेषण

लिंग वह है जो महिलाओं और पुरूष के अन्तर को व्यक्त करते है। तथा समाज में दो वर्ग है एक महिला का दूसरा पुरूष का वर्ग।गाँव में यदि कोई विकास कार्य चल रहा है तो जेण्डर को साथ में रख कर बात करना अवश्यक होगा। इस प्रक्रिया को चार्ट में अंकित कर लेखन शैली द्वारा समझाया जाता है जो विकास के क्रम में सहायक होते है।

प्रशिक्षक श्री ए० के० सिंह ने महिला पुरूष के भेद को बताते हुए और स्पष्ट किया। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षार्थियों की दूरी तरह समझाने के उद्देश्य से श्री ए० के० सिंह विषयगत चार्ट पेपरो पर चित्रण व्यवस्था के तहत प्रशिक्षण कक्ष में चारो तरफ एक विषय को दृष्टि में रखते हुए चार्ट पर चित्रांकन लगाने कार्य बड़ी तन्ययता से करते रहे।

प्रथम सत्र् के समापन के अन्तिम समय पर सभी प्रशिक्षार्थियों के PRA के प्रयोग के लिए क्षेत्रभ्रमण पर जाने के लिए सर्व प्रथम प्रशिक्षक श्री ए० के० सिंह ने 15 समस्त प्रशिक्षार्थियों का 3 ग्रुप बनाया तथा तीनो समूहों ने अपने अपने समूह का नेता चुना।

प्रथम ग्रुप का नेतृत्व की सुरेश शर्मा

द्वितीय ग्रुप नेतृत्व की राधेश्याम चौधरी

तृतीय ग्रुप का नेतृत्व नेतृत्व डॉ० श्री कैलाश नाथ जी रहे।

उक्त तीनो समूहों में 5–5 की संख्या में प्रशिक्षार्थी विभाजित हुए। प्रशिक्षक श्री ए० के० सिंह ने 6 विषय को 2–2 विषय में विभाजित लाटरी सिस्टम द्वारा तीनो ग्रुप लीडर से दो–दो पर्ची उठाने का सुझाव दिया। इस प्रकार प्रत्येक समूह को दो–दो अभ्यास मिले, जो निम्नलिखित है –

ग्रुप नं० 1 को सामाजिक चित्रण और जेण्डर विभेद का विषय
ग्रुप नं० 2 को समय रेखा एवं संसाधन मानचित्रण का विषय
ग्रुप नं० 3 को चपाती चित्रण एवं मौसमी विश्लेषण का विषय

PRA प्रयोग करने हेतु मिला।

ग्रुप एवं विषय विभाजन के पश्चात दोनों प्रशिक्षकों ने कुछ आवश्यक दिशा निर्देश के साथ भोजन अवकाश किया।

भोजनवकाश के पश्चात हमलोग दोपहर बाद एक बजे के आसपास तारा ग्राम द्वारा उपलब्ध साधन से राधापुर ग्राम के लिए प्रस्थान किया जो प्रशिक्षण स्थल से लगभग 20 कि०मी० आगे था।

सभी प्रशिक्षार्थी राधापुर ग्राम में पहुचें तो देखा की गाँव के लोगों ने जैसे हम सब की प्रतिक्षा कर रहे थे। ये व्यवस्था तारा ग्राम द्वारा सम्पर्क के पूर्व में ही कर दी गयी थी।

सभी समूहों का कार्य समाप्त होने पर सभी प्रशिक्षणार्थी 5–6 बजे के आस पास प्रशिक्षण स्थल तारा ग्राम पहुचे। फिर सभी समूह के लोग अपना–अपना चार्ट रात 9 बजे तक तैयार किया एवं निर्णय लिया गया कि इसका प्रस्तुती करण अगले दिन होगा।

दिनांकः 17.09.2004 (प्रशिक्षण का चतुर्थ दिन)

आज दिनांक 17.09.2004 को ग्रामीण सहभागी आंकलन के चौथे दिन का प्रशिक्षण सत्र का शुभारम्भ प्रशिक्षक श्री ए० के० सिंह ने मार्शल आर्ट की कहानी प्रतिभागियों को

सुनाकर किया जिसका उद्‌देश्य गुरू के द्वारा बताये गये ज्ञान को महत्वपूर्ण मानना चाहिए न की उसको महत्वहीन समझना चाहिए। इसके बाद प्रतिवेदक ने गत दिवस की प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं उसपर चर्चा हुई।

इसके बाद कल दिनांक 16.09.04 को राधापुर ग्राम में PRA का अभ्यास करते समय सहभागियों द्वारा की गयी कमियों जैसे– अपना परिचय न देना, पहले चेकलिस्ट न तैयार करना, अधिक सवाल– जवाब किया जाना तथा मुद्दो को पूरा न करना आदि कमियों की जानकारी देते हुए पुनः आज के अभ्यास में उससे सतर्क रहने का सुझाव दिया गया। पुनः प्रशिक्षकों ने शेष PRA Tools के उपर चर्चा शुरू की, जो निम्नलिखित हैः–

7. संसाधन चित्रण

सर्व प्रथम संसाधन चित्रण की जानकारी प्रतिभागियों को दिया गया। इस संदर्भ में बतलाया गया कि संसाधन दो प्रकार के होते है। प्रकृतिक व मानव निर्मित इसलिए दोनो संसाधनों को ध्यान में रखकर संसाधन चित्रण बनाना चाहिए।

8. ट्राजेक्ट

bl fof/k dks lfEefyr ifjHkze.k ¼Toka;V okd½ Hkh dgk tkrk gSA bl fof/k ds }kjk p;fur {ks= ds ckjs esa LFkkuh; yksxksa ds lkFk feydj ,d Nksj ls nwljs Nksj rd Hkze.k djrs gq, fofHkUu izdkj dh tkudkjh izkIr djrs gSA

bl izdkj ds ifjHkze.k esa tc p;fur lalk/ku O;fDr ds lkFk feydj fdlh fo'ks"k LFkku dk Hkze.k djrs gSa rc leqnk; ds lnL;ksa ds lkFk muds rdfyQksa] ck/kvksa rFkk voljksa dks tkuus ds fy, cgqr gh /;ku@lko/kkuh iwoZd ckr&phr djuk iM+rk gSA

9 विकास यात्रा

;g vH;kl xkao es ljdkjh] xSj ljdkjh vFkok xkoa ds yksxksa }kjk fdz;kfUor fd;s@ pyk;s x;s fodkl dk;ksZa dks tkuus ds fy, fd;k tkrk gSA ;g fodkl dk;Zdzeksa dk yksxksa ij gks jgs izHkkoksa dk vkadyu djus esa enn djrk gSA bl vH;kl ls yksx [kqn fodkl dk;ksZs dk QykQy dk fo'ys"k.k dj ldrs gSA

bl izfdz;k ds rgr xkao es gq, fodkl dk;ksZa rFkk ml dk;Zdze ls izkIr vuqHkoksa dks crykus gsrw xzkeh.kksa dks izsfjr fd;k tkrk gSA blesa xzkeh.kksa dks muds utfj;k ls fodkl dk;ksZa dk vkykspukRed rjhds ls fopkjksa dks j[kus ,oa fo'ys"k.k djus dk volj fn;k tkrk gSA ;g vH;kl yksxksa dks fodkl dk;Zdzeksa ds vPNs vkSj cqjs izHkkoksa dks le>us esa enn djrh gS ftlls Hkfo"; esa lq/kkj djus dh laHkkouk curh gSA

10. रूझान विश्लेषण

:>ku fo'ys"k.k ih-vkj-,- dk ,d ,slk fof/k gS ftlesa yksx xkao ds ,sfrgkfld ifjizs{; vk/kkfjr fofHkUu fc"k;ksa@igyqvksa@?kVukdzeksa dks fly&flysokj <ax ls o.kZu djrs gSaA bl fof/k ds }kjk HkkSxksfyd ifjn`'; dks n'kkZ;k tk ldrk gSA mnkgj.k Lo#i vfrr es fdrus isM+&ikS/ks vofLFkr Fks ;k fdruk ?kukiu Fkk] fdl izdkj ds isM+&ikS/ks Fks] ty lalk/ku D;k Fkk] tSfod fofo/krk,a dSlh Fkh] cnyrs ?kVukdze esa vFkkZr orZeku dh oLrqfLFkfr dSlh gS bR;kfn dks tkuus ds fy, bl fof/k dk iz;ksx fd;k tk ldrk gSA

11. मैट्रिक स्कोरिंग

;fn ,d gh oLrq ds vusd izdkj miyC/k gksa rFkk muesa rqyukRed fo'ks"krkvksa dh tkudkjh izkIr djuh gks vFkok muds xq.k&nks"k ds vk/kkj ij yksxksa dh #fp&v#fp @ilUn&ukilUn tkuuh gks rks eSfV~Dl jSafdax@Ldksfjax fof/k izHkkoh fl) gksrh gSA

bl fof/k ls fuEufyf[kr tkudkjh izkIr dj ldrs gSa &

- o`{k] pkjk] ?kkl vkfn ds ckjs esa
- fcekfj;ksa ds ckjs esa
- jkstxkj ds izdkj ds ckjs esa
- tkuojksa ds izdkj ,oa iztkfr;ksa ds ckjs esa
- fofHkUu leqnk; esa dk;Z vkSj fu.kZ; ds ckjs esa
- fofHkUu leqnk; esa dk;Z ftlls nwljs ij vkfJr gksa

12. कारण प्रभाव विष्लेषण

bl fof/k dk iz;ksx yksxksa ds leL;kvksa] mlds dkj.k vkSj izHkkoksa dks tkuus fd fy, fd;k tkrk gS tks muds jkstejkZ dh ftUnxh ls tqMs+ gksrs gSA

इसके बाद पुनः उन्ही समूहो को मानते हुए समूह के लीडरो को ही बदलने का बदलने का निर्णय सर्वसम्मत से लिया गया, प्रत्येक समूह को प्रशिक्षक महोदय द्वारा आवश्यक सुक्षाव देकर गाँव में अभ्यास करने हेतु साथ लेकर काछीपुरा गाँव में प्रस्थान किया। रास्ते में ही D.A के कार्यकर्ता श्री धर्मेन्द्र कुमार को निवाड़ी बाजार से लेकर हमलोग काछीपुरा गाँव पहुँचे जहां पर तीनो समूहो को अलग–अलग बैठकर अपनी अभ्यास किया। अपराह्न 3 बजे सभी प्रतिभागी ग्रामीण अभ्यास कर तारा ग्राम प्रशिक्षण कक्ष पहुँचे। इसके बाद सभी लोगो ने लंच ग्रहण किये और लंच के दौरान प्रशिक्षक महोदय द्वारा सभी प्रतिभागियों को 4 बजे से किये गये अभ्यास को चार्ट पेपर पर तैयार करने का सुझाव दिया गया और साय 7 बजे से प्रस्तुतीकरण का समय निश्चित किया गया। सभी प्रतिभागियों ने भोजन और आराम के उपरान्त साम 5 बजे से ले अपने चार्टो को तैयार करने का कार्य किया। निश्चित समय के अनुसार सभी प्रतिभागी साम 7 बजे से प्रस्तुतीकरण हेतु प्रशिक्षण कक्ष में उपस्थित हुए जिसमें सर्व प्रथम समूह नं० 2 के ग्रुप लीडर को अपने कल किये गये अभ्यास को प्रस्तुतीकरण करने के लिए कहा गया।
समुह नं० 2 के टीम लीडर श्री मकसूद समाजिक चित्रण पर प्रस्तुतीकरण के लिए बुलाये गये इसमें आबजर्बर श्री सब्यसाची दास व मंसूर हुए। इसके बाद समूह नं० 1 के ग्रुप लीडर श्री अशोक शुक्ला व साथ में दो साथी और समय रेखा पर प्रस्तुतीकरण किये जिसमें आवर्जबर के रूप में श्री सत्यनारायण तिवारी व डॉ० कैलास थे। जिसमें प्रस्तुतीकरण में सहायकों ने समूह नं० 1 के लिए कुछ कमियाँ बताये –

1. चार्ट पेपर पर PRA प्रतिभागी का नाम नही बल्कि ग्रामीणो का नाम होना चाहिए।
2. दिनांक नही लिखे थे।

तदुपरान्त ग्रुप नं० 1 का प्रस्तुतीकरण सामाजिक चित्रण का भी मकसूद द्वारा किया गया। अबजर्बर श्री सव्यसाची और मंसूर वत्ख थे। जिसमें काफी सवाल हुए। बाद में जिसका जवाब ग्रुप द्वारा दिया गया।
प्रशिक्षक एवं अबजर्बर द्वारा सुझाव

1. पूर्व में प्लानिंग नही की गई थी।
2. जिम्मेदारियो का बटवारा नही किया गया था।
3. समाज की सारी चीजें जैसे – जाति, मकान की स्थिति आदि स्पष्ट नही दिखे।

उसके बाद ग्रुप नं० 3 का प्रस्तुतीकरण मनीष श्रीवास्तव द्वारा किया गया जिसका विषय था चपाती चित्रण। प्रस्तुतीकरण को पुरा करने हेतु डॉ० जौहर जी पुनः आये और प्रस्तुतीकरण किया गया।

इसमें आवजर्बर सुरेश शर्मा और रंजीत सिंह रहे। इसमें भी काफी असंतोष मिला। कई सवाल आये जैसे– चपाती का एक दूसरे में मिलना, स्पष्ट न होना आदि।

दिनांक 18.09.04 (प्रशिक्षण का पांचवां दिन)

सत्रारंभ के साथ ही प्रशिक्षणार्थियों एवं संदर्भ व्यक्तियों का समूह फोटोग्राफी किया गया। तत्पश्चात दिनांक 16.09.04 एवं 17.09.04 का प्रशिक्षण प्रतिवेदन पढ़ा गया एवं रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए सुझाव बताये गये ।

प्रशिक्षण सत्र को आगे बढ़ाते हुए संदर्भ व्यक्ति श्री ए० के० सिंह ने चील के अंडा का मुर्गी के अंडा में मिल जाने से चील का भविष्य में न उड़ पाना नामक कहानी बताई जिसका अर्थ था कि विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिये नाकारात्मक साथियों से सावधान रहें।

तत्पश्चात आज के प्रशिक्षण सत्र को चलाने के लिये प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षणार्थीयों की ओर से ही सहभागिता के आधार पर Facilitator टीम का गठन किया गया। Facilitator टीम ने कक्षा की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए ग्रुप नं० 3 को PRA मौसमी विश्लेषण को प्रस्तुत करने को कहा।

मौसमी विश्लेषण को प्रस्तुत करते हुए ग्रुप न० 3 ने बताया कि पुरानी बीमारीयों के बारे राधापुर ग्राम के निवासी जायदे संवेदनशील है क्योकिं इन बीमारियों का इलाज लम्बे समय तक कराना पड़ता है एवं खर्चीला है जबकि सामान्य कम खर्च में तुरंत ठीक हो जाती है। इस रिपोर्ट पर चर्चा के उपरांत संदर्भ व्यक्तियों ने सुझाव दिये की मुद्दे के निर्धारण में प्रशिक्षण में बताये गये मुद्दे की ही पुर्नावृति न हो बल्कि गाँव के अनुसार नये मुद्दे उभर कर आना चाहिए।

तत्पश्चात ग्रुप नं० 2 ने जीविका विश्लेषण को प्रस्तुत किया। राधापुर ग्राम के अधिकांश परिवार कृषि कार्य पर निर्भर है। उसके अलावे कृषि मजदूरी एवं मजदूरी तथा अन्य कार्य रहे है। इस गाँव में 100 लोग पलायन कर जाते हैं। संदर्भ व्यक्तियों ने शीर्षक नामकरण के संबंध में बताये कि इस शीर्षक जीविका विश्लेषण के स्थान पर जातिगत आधार पर जीविका विश्लेषण होना चाहिए था। इससे बिषय की तीव्रता भी स्पष्ट होनी चाहिये था। क्रम सं0 नहीं होना चाहिये था। विश्लेषण के क्रम में दो विषय पर जानकारी लेने की प्रक्रिया हो गयी थी जिसे नहीं होना चाहिये था।

तत्पश्चात ग्रुप नं० 1 ने राधापुर ग्राम का जेन्डर विभेद विश्लेषण प्रस्तुत किये। जेन्डर विभेद में इस ग्रुप ने महिलाओं एवं पुरूषों के समयानुसार कार्यो का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि महिलायें पुरूषों की तुलना में अधिक घंटो तक कार्य करती है। साथ ही इस ग्रुप ने ग्राम में महिलाओं एवं पुरूषों के सामाजिक मान्यताओं को स्पष्ट किया। संदर्भ व्यक्ति की ओर से सुझाव आया कि लिंग के स्थान पर जेंडर का भुमिका एवं मान्यताओं के आधार पर विश्लेषण होना चाहिये था। चर्चा आयी कि साथियों में समन्वय की प्रकिया अधिक सशक्त होना चाहिए था।

प्रशिक्षण के दूसरे सत्र में दिनांक 17.09.04 के PRA में काछीपुरा ग्राम का संसाधन मानचित्रण प्रस्तुत करते हुए ग्रुप नं० 2 ने बताया कि यह एक समृद्ध गाँव हैं, कृषि क्षेत्र में काफी प्रगति है। लेकिन यहाँ सिंचाई की समस्या है। इस प्रस्तुति में सुझाव आया कि संसाधन मानचित्रण में ग्रुप की समझ और अधिक होनी चाहिये थी तथा और अधिक

संसाधनों को आना चाहिये था। Visualisation अधिक होना था। संसाधनों का Diversity नहीं है। आगे इन बातों को ध्यान में रखकर कार्य करें।

तत्पश्चात ग्रुप नं० 1 ने काछीपुरा गाँव का Transect विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि Transect के माध्यम से हमलोगों ने पाया कि यहाँ पानी पीने के प्रर्याप्त साधनों की कमी है। इस विधि में प्राप्त अन्य साधनों की उपयोगिता एवं ग्रामीणों का ससाधनो से संबंधीत भविष्य सोच को बताया। सुझाव आया कि Transect में Direction का स्पष्टीकरण होना जरूरी है। इसमें Character का विभाजन एवं उपयोग समस्या तथा अवसर का उल्लेख होना चाहिए। ग्रुप नं० 3 ने काछीपुरा ग्राम का रूझान विष्लेषण के तहत फसलों के Trend पर पाया गया कि पानी के कमी के करण धान की रोपनी नगन्य है अब लोगों का रूझान नगदी फसलो के उत्पादन में अधिक है । सुझाव आया कि कृषि फसलो का रूझान 20 वर्षो के बजाय 50 वर्षो का होना चाहिए था। क्योकिं प्राकृति से जुड़ी कार्यो का रूझान जल्दी नही बदलता।

पुनः समूह नं० 3 ने वर्षा के कमी के कारण प्रभाव विश्लेषण प्रस्तुत किया। सुझाव आया कि मुद्दा का चुनाव सही होना चाहिए था।

ग्रुप नं० 2 ने विकास की यात्रा पर अपना विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए विकास कार्यो के वर्ष, उससे होने वाले लाभ–हानि, लाभान्वित लोग एवं गैर लाभान्वित लोगो की स्थितियों के बारे में बताया। सुझाव आया कि शिर्ष विकास की यात्रा के बजाय विकास कार्यक्रम विश्लेषण होना चाहिए था।

ग्रुप नं० 1 ने काछीपुरा गाँव का Matrix विश्लेष्ण करते हुए कहा कि फलो में सबसे ज्यादा आम और उसके बाद कटहल उस गाँव के लिये सबसे महत्वपूर्ण है । साथ ही गेंहु के विभिन्न प्रकारों का स्कोरिंग विश्लेंष्ण प्रस्तुत करते हुए लोक को प्रथम एवं डवल्यु–एच को द्वितिया स्थान पर पाया। सुझाव आया कि इसमें Facilitation और अधिक होना चाहिये था।

भोजनाकाश के बाद सत्र की शुरूआत सुरेशचन्द्र शर्मा द्वारा “ लाखों घर बर्बाद हो गये एक दहेज की बोली ” पर गीत से शुरू हुआ। संदर्भ व्यक्ति ने Pie Diagram के संबंध बताते हुए कि कहे कि हम इसमें 100 प्रतिशत को दर्शाता है। इससें समझने में आसानी होती है।

तत्पश्चात समस्या वृक्ष (Problem tree) के बारे में बताया गया। Problem tree Casual Analyis से थोड़ा भिन्न हैं Causal Analysis में कारण प्रभाव दिखाते है जब Problem tree में सिर्फ समस्या दर समस्या का आकलन किया जाता है।

सहभागियो कि ओर से ग्रामीण क्षेत्र समस्याओं के आधार पर PRA के प्रयोग के प्रश्न आये। जिसके बारे में बताया गया PRA का Tools 14 से भी अधिक हो सकता है यह आपके विवेक पर निर्भर करता है।

अंतिम समय में Assessment sheet के माध्यम से 14 से 18 नवम्बर 2004 के प्रशिक्षण का मुल्यांकन किया गया । साथ ही Learning material वितरीत किया गया।

समापन समारोह में प्रषिक्षकों एवं सहभागियों के अलावा विकास विकल्प के डॉ के. के. उपाध्याय, सुश्री विद्या एवं सुश्री जूही ने भाग लिया। सभी को धन्यवाद ज्ञापन के बाद प्रषिक्षण समाप्ति की घोषणा संध्या 5 बजे की गई।

LIST OF PARTICIPANTS

SL	Name of Participants	Organisation/Adress
01	Dr. Kailash	Lok Jagriti Kendra Madhupur, Deoghar, Jharkhand
02	Mr. Kuber Singh	Krishnarpit Sewaashram, A-4, Atrinagar, Atarra, Banda, U. P

03	Mr. M. K. Shrivastava	Awadh Seva Sansthan, 273, J. N. Shukla Road, Pratapgarh, U. P.
04	Dr. Ramchandra Jauhar	Adarsh Shiksha Samiti, Katra, Pratapgarh
05	Mr. Suresh Chnadra Sharma	Lokpriya Janhit Sewa Sansthan, Lalganj, Pratapgrah, U. P.
06	Mr. Satya Naraian Tiwari	Pratapgarh Gramothan Samiti, Lalganj, Pratapgarh, U. P.
07	Mr. Vinod Kr. Permanik	Jan Lok Kalyan Parishad, Sindhi para, Pakur, Jharkhnad
08	Mr. Ranjit Singh	B. A. V. S. 129, Rajendranagar, Jalan, U. P.
09	Mr. Radheshyam Choudhary	Sanchit Vikas Sansthan, Hashnapur, PO: Bargadawa, District: Basti, U. P.
10	Mr. Maskur Alam	Socail Action Foundation, Pugmil, Near Fatima Academy, Dist: Hazaribagh, Jharkhand
11	Mr. Mansoor Bakht	Karra Society for Rural Action, Ranchi, Jharkhand
12	Mr. Ashok Shukla	Prakash Jan Seva Sansthan, Nutan Nagar, Korrah, Hazaribagh, Jharkhand
13	Dr. Sabya Sachi Das	Yuva Rural, Nagpur
14	Mr. Abhishek Anand	Bhartiya, Gramin Vikash Evam Ayurved Seva Sansthan, Patna
15	Mr. Febianus Kujur	Samaj Pragati Kendra, Balumath, Latehar